PAHALWAN GURUDEEN PRASIKSHAN MAHAVIDYALAYA

PANARI, LALITPUR (U.P.)

JOURNAL PAPER

(ANTHOLOGY THE RESEARCH)

DR. VANDANA YAGIK

TITLE - (CONTRIBUTION OF ADULT EDUCATION IN HUMAN DEVELOPMENT)

ISSN NO. 2456-4397

Multi-disciplinary International Journal

Certificate of Paper Publication

Anthology

ISSN 2456-4397

SJIF 6.018

IIJIF 4.02

RNI UPBIL/2016/68067

Indexed Google

Anthology The Research

This is to certify that the paper titled ...मानव विकास मे प्रौढ शिक्षा का योगदान...

Author : वंदना याज्ञिक

Designation : व्याख्याता

Dept. : गृह विज्ञान

College : पहलवान गुरुदीन महिला महाविद्यालय, ललितपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

has been published in our Peer Reviewed International Journal

vol. 5 issue 4 month July year 2020

The mentioned paper is measured upto the required.

Dr. Asha Tripath
(Vice-President)

Dr Rajeev Misra
(Editor/Secretary)

Social Research Foundation

Non Governmental Organisation

128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011

[illegible] Web : [illegible]

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-4* July-2020
Anthology : The Research

Contents (Hindi)

S. No.	Particulars	Subject	Page No.	
			From	To
1.	इन्दुबाली के उपन्यास 'बाँसुरियां बज उठी' में नारी का यौन शोषण **Sexual Abuse of Woman in Indubali Novel 'Bansuriyaan Baj Uthi'** गुरमेल सिंह एवं ज्ञानी देवी गुप्ता, तलवंडी साबो (बठिण्डा) पंजाब, भारत	हिन्दी	H-01	H-04
2.	पंचायत समिति में महिलाओं की सहभागिता **Participation of Women in Panchayat Samiti** तेज कुमार, श्रीगंगानगर, राजस्थान भारत	समाजशास्त्र	H-05	H-07
3.	वक्त की विडम्बना "कोरोना एक वैश्विक महामारी" **Irony of Time "Corona A Global Pandemic"** कुसुम शर्मा, आगरा, भारत	शिक्षा	H-08	H-11
4.	भारतीय विदेश नीति में मध्यपूर्व का आयाम **Middle East Dimension in Indian Foreign Policy** दिव्या, जयपुर, राजस्थान, भारत	राजनीति विज्ञान	H-12	H-14
5.	मानव विकास में प्रौढ़ शिक्षा का योगदान **Contribution of Adult Education in Human Development** वंदना याज्ञिक, ललितपुर, उत्तर प्रदेश, भारत	गृह विज्ञान	H-15	H-16

ISSN: 2456–4397
RNI No.UPBIL/2016/68067
Vol.-5* Issue-4* July- 2017
Remarking an analisation

मानव विकास में प्रौढ़ शिक्षा का योगदान
Contribution of Adult Education In Human Development

Paper Submission: 15/07 2017 Date of Acceptance: 25/07 2017 Date of Publication: 26/07/ 2017

वंदना याज्ञिक
व्याख्याता,
गृह विज्ञान विभाग,
पहलवान गुरुदीन महिला महाविद्यालय, ललितपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सीखना एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसकी अभिव्यक्ति व्यवहार द्वारा होती है। यह प्रक्रिया परिवर्तन या परिमार्जन भी हो सकता है सीखने की क्रिया द्वारा व्यवहार में आये परिवर्तन अनुभव पर आधारित होते है और उसमें समायोजन में सहायता प्राप्त होती है। सीखने की क्रिया बाल्यकाल से प्रारम्भ होती है और यौवनावस्था तथा पहुँचते–पहुँचते हम अपनी सभ्यता, संस्कृति, और अपने आस पास के वातावरण से बहुत कुछ सीख लेते है

सीखने की क्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है हम अपने आस पास होने वाले परिवर्तनों के साथ समायोजन करते चलते है परिवर्तनों, प्रतिक्रियाओं और सीखने का क्रम इस प्रकार जीवन पर्यन्त चलता रहता है। और शैक्षणिक प्रक्रियाओं का जीवन भर उपयोग करके व्यक्ति अधिकतम व्यक्तिगत विकास को सुनिश्चित कर सकता है।

Psychologically learning is a mental process that is expressed by behavior. This process can also be a change or a refinement, based on the experience experienced in the practice of learning and helps in its adjustment. The process of learning starts from childhood and we learn a lot from our civilization, culture and environment around us as we reach puberty and

The process of learning goes on throughout the life, we keep adjusting with the changes happening around us, the order of changes, reactions and learning goes on in this way. And by using educational processes throughout the life, one can ensure maximum personal development.

मुख्य शब्द : प्रौढ़ शिक्षा, साक्षरता, प्रजातान्त्रिक देश, व्यावसायिक शिक्षा, आवश्यकता, साक्षरता समाज।
Adult Education, Literacy, Democratic Country, Vocational Education, Need, Noble Society.

प्रस्तावना

प्रौढ़ो की सीखने की प्रक्रिया सामान्य शिक्षण से भिन्न होती है। कुछ पृष्ठभूमिक कारक इस क्रिया को प्रभावित करते है। यह पहले भी कहा जा चुका है कि सीखने के क्रम में व्यक्ति की जितनी ही अधिक ज्ञानेन्द्रियाँ भाग लेती है। व्यक्ति उतना ही अधिक सीख पाता है।

प्रौढ़ शिक्षण में लक्ष्य प्राप्ति एक आवश्यक शर्त है। परिणाम तक पहुँचना वांछित लक्ष्य की प्राप्ति को सघन रूप से होना चाहिए, जहाँ पहुँच कर सीखने वाले को स्वंय लगने लगे कि उसने शिक्षण द्वारा कुछ प्राप्त किया है। सफलता केवल सीखने वाले व्यक्ति को नही वरन उसके साथ जुड़े अन्य व्यक्तियो को भी प्रेरणा स्रोत बनाती है। क्योकि हर व्यक्ति की यह आन्तरिक इच्छा होती है कि वह कुछ करे कुछ प्राप्त करे, कुछ यश प्राप्त करे तथा अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाया दे। दूसरे को आगे बढ़ता देख कर अन्य व्यक्तियो को ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा भी होती है। किन्तु साथ–साथ अभी प्रेरणा भी मिलती है।

प्रौढ़ शिक्षण को उपचारी शिक्षण भी कहा गया है। क्योकि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने अनेक समस्याओं से जूझने की शक्ति तथा उसके अनेक समाधान प्राप्त करता है। आवश्यकता केन्द्रित शिक्षण होने के कारण सीखने वाले को यह स्वतंत्रता रहती है कि वह अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपनी शिक्षण विषय का चयन करे। 'क्रियात्मक शिक्षण प्रौढ़ो के व्यक्तित्व और व्यवहार के अनेक रूपो से प्रभावित कर सकता है। जैसे– पत्र–पत्रिकाऐ अखबार

ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol.-5* Issue-4* July- 2017
Remarking an analisation

पढ़कर समकालीन स्थितियों से स्वयं को जोड़ना लेखना द्वारा अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करना आदि व्यवहारिक स्वरूप एवं उपयोगिता के कारण वयस्क शिक्षण को क्रियात्मक शिक्षण भी कहा गया है। यह व्यक्ति ही नही उसके परिवेश के सर्वतोमुखी विकास की परिकल्पना करता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति जब बेहतर ढंग से अपना कार्य सम्पादन करने लगता है बेहतर आर्थिक स्थितियों की ओर अग्रसर होता है तो अकेला वह व्यक्ति ही नही, अपितु उसका परिवार उसका समाज और यहाँ तक की वह देश जिसमें वह रहता है प्रगती पथ पर अग्रसर होता है। इस प्रकार क्रियात्मक शिक्षण वैयक्तिक विकास के साथ राष्ट्रीय विकास मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य

सामान्य शिक्षण का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षण प्रमाण–पत्र तथा स्नातकोत्तर उपाधियों तक ही सीमित रहता है तथा शिक्षार्थियों का उद्देश्य यही रहता है। कि वे इन्हें प्राप्त कर नौकरियों के योग्य स्वयं को घोषित कर सकें। पढ़ाये गये अधिकांश विषयों का उपयोग एक सामान्य छात्र अपने जीवन काल में नही कर पाता तथा कुछ लोग तो नौकरियों को प्राप्त कर लेने के बाद पुस्तकों की ओर देखना भी पसन्द नही करते किन्तु प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य कुछ और ही हैं। जो शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों पर लागू होते हैं। शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों का इस बात के प्रति पूरी सतर्कता बरतते है कि पठन–पाठन का सकारात्मक उपयोग हो सके। प्रौढ़ शिक्षण का क्रियात्मक एवं उद्देश्यपूर्ण होना आवश्यक है क्योंकि प्रौढ़ों के लिए उपाधियाँ, डिग्रियों या प्रमाण–पत्रों की प्रायः कोई उपयोगिता नही होती। उनके लिए तो वही नौकरी या कार्य महत्वपूर्ण होता है, जिससे उनका जुड़ाव होता है। उसी में दक्षता प्राप्त करना अपने व्यवसाय को उन्नत बनाना, आमदनी के और जरिए निकालना ऐसी ही आशा के साथ वे प्रौढ़ शिक्षण की ओर उन्मुख होते हैं।

पूरे विश्व में प्रौढ़ शिक्षण कार्यक्रम को एक आन्दोलन के रूप में स्वीकार किया गया है। अधिकांश देश नाइजीरिया सरकार द्वारा मान्य प्रौढ़ शिक्षण के उद्देश्यों को ही आधार मानकर, अपने देश में उन्हीं आदर्शों का पालन करते हैं।

1. उन प्रौढ़ों को क्रियात्मक शिक्षण प्रदान करना जो कभी किसी प्रकार के औपचारिक शिक्षण से लाभान्वित नही हो पाए।
2. उन युवाओं को क्रियात्मक उपचारी शिक्षण प्रदान करना जो औपचारिक विद्यालयी शिक्षण व्यवस्था के समय से पूर्व विलग हो गये।
3. औपचारिक शिक्षण प्राप्त विभिन्न वर्गों को लोगों को लोगों के निमित अतिरिक्त शिक्षण व्यवस्था करना जिससे वे अपना बुनियादी ज्ञान बढ़ा सकें तथा अपने कार्य–कौशल्य में उन्नति ला सकें।
4. विभिन्न वर्गों के कार्यकर्ताओं एवं पेशावरों को सेवाकाल में ही व्यावसायिक एवं कार्य–क्षेत्र से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रदान करना जिससे उनकी कार्य–दक्षता बेहतर हो सके।
5. जन प्रबोधन हेतु देश के प्रौढ़ नागरिकों को आवश्यक सुरूचि सम्पन्न सांस्कृतिक एवं नागरिक शिक्षण देना।
6. प्रमुख समसामयिक समस्याओं तथा सामाजिक परिवर्तनों के तर्कपूर्ण अध्ययन का विकास करना।
7. नये ज्ञान, योग्यता, मनोवृत्ति या व्यवहार प्रारूपों की प्राप्ति हेतु अभिरूचि या रूझान का विकास करना।
8. कार्य–क्षेत्र में व्यक्ति की सचेतन एवं प्रभावी सहभागिता को सुनिश्चित करना।
9. व्यक्ति एवं उसके भौतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश के पारस्परिक सम्बन्धों के मध्य सजगता बढ़ाना।

महत्व

शिक्षा मनुष्य को सत्य की पहचान कराने वाली है। यह ज्ञान की आँख देती है। यह हमारी सोई प्रतिभा को जगाकर उसे कारगार बनाती है। देखा जाये तो समूच विश्व एक खुली हुई पाठशाला है। हर व्यक्ति जीवन भर कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है व्यक्ति के लिए उसका अनुभव ही शिक्षा का स्वरूप है किन्तु उम्र के पहल पड़ाव को जिसे सामान्यता विद्यार्थी जीवन कहते हैं। यही शिक्षा के लिए उपयुक्त स्वीकार किया गया है। भारतीय दृष्टी से इसे ब्रह्मचर्य आश्रम कहते है यह पाँच वर्ष तक के बालक माता के निर्देशों में जीवन की प्रारम्भिक बाते सीखतें है। पाँच से पच्चीस वर्ष उसके लिए यह शिक्षा पाने के लिए निश्चित किय गये है।

यह विधिवत शिक्षा का स्वरूप है। विद्वानों का यह मानना है कि शिक्षा तो जब भी, जहाँ भी, मिले उसे हाथ बढ़ाकर स्वीकार करना चाहिए। प्रौढ़ शिक्षा निश्चय ही एक प्रशंसनीय योजना है।

निष्कर्ष

भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए यह आवश्यकता है कि यहाँ शिक्षित व्यक्तियों को प्रौढ़ शिक्षा में सक्रिय योगदान करना चाहिए। निरक्षरता को प्रौढ़ शिक्षा को लोगो तक लाना और उन्हे अक्षर ज्ञान कराना साधारण काम नही है।

इस क्षेत्र काम करने वाले कार्यकर्ता इसे बता सकते है कि यह कितनी टेढ़ी खीर है;

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं एन0सी0सी0 के द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए तथा कानून बनाकर ऐसा प्रबधान कर देना चाहिए कि स्नातक की उपाधि तभी प्राप्त होगी जब प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम पाँच व्यक्तियों को साक्षर कर देगा। किन्तु हमे धैर्यपूर्वक इसे एक जन आन्दोलन के रूप में इसे विकसित करना है यह तभी संभव है जब प्रत्यक शिक्षित व्यक्ति इस कार्यक्रम को अपने जीवन का उपदेश बना ले निरक्षर को अक्षर का ज्ञान कराना एक पुण्य कार्य भी है जो हमारे इस्लोक और परलोक दोनो को सुधारता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा डॉ0 आर0 ए0 (2001) शिक्षा अनुसंधान, लाल बुक डिपो, मेरठ।*
2. *कपिल एच के (1975) सांख्यिकी के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।*
3. *पाठक डी0पी0 (1996) शैक्षिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।*
4. *पचौरी डॉ0 गिरीश (2014) शिक्षा का सामाजिक आधार लायन बुक डिपो मेरठ।*
5. *राखा राठौर आगरा पब्लिकेशन, आगरा*
6. *रीना कनूजा मेरठ पब्लिकेशन, मेरठ*

पढ़कर समकालीन स्थितियों से स्वंग को जोड़ना लेखना द्वारा अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करना अपने व्यवहारिक स्वरूप एवं उपयोगिता के कारण वयस्क शिक्षण को क्रियात्मक शिक्षण भी कहा गया है। यह व्यक्ति ही नही उसके परिवेश के सर्वतोमुखी विकास की परिकल्पना करता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति जब बेहतर ढंग से अपना कार्य सम्पादन करने लगता है बेहतर आर्थिक स्थितियो की ओर अग्रसर होता है तो अकेला वह व्यक्ति ही नही, अपितु उसका परिवार उसका समाज और यहाँ तक की वह देश जिसमे वह रहता है प्रगती पद पर अग्रसर होता है। इस प्रकार क्रियात्मक शिक्षण वैयक्तिक विकास के साथ राष्ट्रीय विकास मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य

सामान्य शिक्षण का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षण प्रमाण–पत्र तथा स्नातकोत्तर उपाधियों तक ही सीमित रहता है तथा शिक्षार्थियों का उद्देश्य यही रहता है। कि वे इन्हें प्राप्त कर नौकरियों के योग्य स्वयं को घोषित कर सकें। पढ़ाये गये अधिकांश विषयों का उपयोग एक सामान्य छात्र अपने जीवन काल मे नही कर पाता तथा कुछ लोग तो नौकरियों को प्राप्त कर लेने के बाद पुस्तकों की ओर देखना भी पसन्द नही करते किन्तु प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य कुछ और ही हैं। जो शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों पर लागू होते हैं। शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों का इस बात के प्रति पूरी सार्थकता बनते है कि पठन–पाठन का सकारात्मक उपयोग हो सके। प्रौढ़ शिक्षण का क्रियात्मक एवं उद्देश्यपूर्ण होना आवश्यक है क्योंकि प्रोढ़ों के लिए उपाधियों, डिग्रियो या प्रमाण–पत्रों की प्रायः कोई उपयोगिता नही होती। उनके लिए तो वही नौकरी या कार्य महत्वपूर्ण होता है, जिससे उनका जुड़ाव होता है। उसी में दक्षता प्राप्त करना अपने व्यवसाय को उन्नत बनाना, आमदनी के और जरिए निकालना ऐसी ही आशा के साथ वे प्रौढ़ शिक्षण की ओर उन्मुख होते हैं।

पूरे विश्व में प्रौढ़ शिक्षण कार्यक्रम को एक आन्दोलन के रूप में स्वीकार किया गया है। अधिकांश देश नाइजीरिया सरकार द्वारा मान्य प्रौढ़ शिक्षन के उद्देश्यों को ही आधार मानकर, अपने देश में उन्हीं आदर्शों का पालन करते है।

1. उन प्रौढ़ो को क्रियात्मक शिक्षण प्रदान करना जो कभी किसी प्रकार के औपचारिक शिक्षण से लाभान्वित नही हो पाए।
2. उन युवाओं को क्रियात्मक उपचारी शिक्षण प्रदान करना जो औपचारिक विद्यालयी शिक्षण व्यवस्था के समय से पूर्व विलय हो गये।
3. औपचारिक शिक्षण प्राप्त विभिन्न वर्गों को लोगों को लोगो के निमित अतिरिक्त शिक्षण व्यवस्था करना जिससे वे अपना बुनियादी ज्ञान बढ़ा सके तथा अपने कार्य–कौशल्य में उन्नति ला सकें।
4. विभिन्न वर्गों के कार्यकर्ताओं एवं पेशावरों को सेवाकाल में ही व्यावसायिक एवं कार्य–क्षेत्र से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रदान करना जिससे उनकी कार्य–दक्षता बेहतर हो सके।
5. जन प्रबोधन हेतु देश के प्रौढ़ नागरिकों को आवश्यक सुरुचि सम्पन्न सांस्कृतिक एवं नागरिक शिक्षण देना।
6. प्रमुख समसामयिक समस्याओं तथा सामाजिक परिवर्तनों के तर्कपूर्ण अध्ययन का विकास करना।
7. नये ज्ञान, योग्यता, मनोवृत्ति या व्यवहार प्रारूपों की प्राप्ति हेतु अभिरुचि या रूझान का विकास करना।
8. कार्य–क्षेत्र में व्यक्ति की सचेतन एवं प्रभावी सहभागिता को सुनिश्चित करना।
9. व्यक्ति एवं उसके भौतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश के पारस्परिक सम्बन्धों के मध्य सजगता बढ़ाना।

महत्व

शिक्षा मनुष्य को सत्य की पहचान कराने वाली है। यह ज्ञान की आँख देती है। यह हमारी सोई प्रतिभा को जगाकर उसे कारगार बनाती है। देखा जाये तो समुच विश्व एक खुली हुई पाठशाला है। हर व्यक्ति जीवन भर कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है व्यक्ति के लिए उसका अनुभव ही शिक्षा का स्वरूप है किन्तु उम्र के पहल पढ़ाव को जिसे सामान्यता विद्यार्थी जीवन कहते हैं। यही शिक्षा के लिए उपयुक्त स्वीकार किया गया है। भारतीय दृष्टी से इसे ब्रह्मचर्य आश्रम कहते है यह पाँच वर्ष तक के बालक माता के निर्देशों में जीवन की प्रारम्भिक बाते सीखते हैं। पाँच से पच्चीस वर्ष उसके लिए यह शिक्षा पाने के लिए निश्चित किए गये है।

यह विधिवत शिक्षा का स्वरूप है। विद्वानों का यह मानना है कि शिक्षा तो जब भी, जहाँ भी, मिले उसे हाथ बढ़ाकर स्वीकार करना चाहिए। प्रौढ़ शिक्षा निश्चय ही एक प्रशंसनीय योजना है।

निष्कर्ष

भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए यह आवश्यकता है कि यहाँ शिक्षित व्यक्तियों को प्रौढ़ शिक्षा में सक्रिय योगदान करना चाहिए। निरक्षरता को प्रौढ़ शिक्षा को लोगो तक लाना और उन्हे अक्षर ज्ञान कराना साधारण काम नही है।

इस क्षेत्र काम करने वाले कार्यकर्ता इसे बता सकते है कि यह कितनी टेढ़ी खीर है;

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं एन०सी०सी० के द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए तथा कानून बनाकर ऐसा प्रावधान कर देना चाहिए कि स्नातक की उपाधि तभी प्राप्त होगी जब प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम पाँच व्यक्तियो को साक्षर कर देगा। किन्तु हमे धैर्यपूर्वक इसे एक जन आन्दोलन के रूप में इसे विकसित करना है यह तभी संभव है जब प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति इस कार्यक्रम को अपने जीवन का उपदेश बना ले निरक्षर को अक्षर का ज्ञान कराना एक पुण्य कार्य भी है जो हमारे इहलोक और परलोक दोनों को सुधारता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा डॉ० आर० ए० (2001) शिक्षा अनुसंधान, लाल बुक डिपो, मेरठ।*
2. *कपिल एच के (1975) सांख्यिकीय के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।*
3. *पाठक डी०पी० (1996) शैक्षिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।*
4. *पचौरी डॉ० गिरीश (2014) शिक्षा का सामाजिक आधार, लायल बुक डिपो मेरठ।*
5. *राका राठौर आगरा पब्लिकेशन, आगरा*
6. *रीना खनूजा मेरठ पब्लिकेशन, मेरठ*